



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (10-04-18)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त अनुभूतियां करने वाले, मन के उड़नखटोले से अव्यक्त वतन और मूलवतन की सैर करने वाले, सदा निवारण स्वरूप, मास्टर दयालु, कृपालु, रहमदिल निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद मधुबन घर से स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - बापदादा की यह सीज़न ड्रामा के नये नये सीन दिखाते, सभी को एकरस, साक्षी स्थिति का पाठ पढ़ाते हुए सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस लास्ट टर्न में तो 30 हजार से भी अधिक भाई बहिनें शान्तिवन के विशाल प्रांगण में पहुंच गये। सभी ने प्यारे अव्यक्त बापदादा के रिवाइज महावाक्यों से भी बहुत-बहुत वन्दरफुल अनुभूतियां की। बाबा कहे बच्चे, इस मधुबन यज्ञ की महिमा कम नहीं है, जो भी यहाँ आते हैं उनको बहुत फायदे होते हैं। इतनी श्रेष्ठ आत्मायें मधुबन में ही इकट्ठी मिलती हैं, इतना बड़ा बेहद का परिवार सारे कल्प में और कहाँ भी नहीं मिलता, यह भगवान का परिवार यहाँ ही मिलता है। इतने हजारों भाई बहिनों की सभा होते भी सभी गहन शान्ति का अनुभव कर रहे थे, वायुमण्डल में किसी भी प्रकार की हलचल नहीं थी। यह भी मीठे बाबा के सूक्ष्म सकाश की कमाल है, जो नये पुराने सभी बच्चों को मीठा बाबा सर्व शक्तियों, सर्व वरदानों से भरपूर कर देता है।

अभी तो मीठा बाबा हम सबको अपने स्नेह के उड़नखटोले में उड़ा करके अपने वतन की सैर करा रहा है। बाबा बार-बार हम सबको घर की भी याद दिलाते हैं क्योंकि अब घर जाने का समय समीप है। यहाँ निमित्त-मात्र हैं। अगर धरती पर पांव होगा तो इधर उधर देखने में टाइम जायेगा इसलिए धरती पर पांव नहीं हैं, सदा उड़ती कला में उड़ते हैं।

बाबा ने हम बच्चों को कितना खुशमिज़ाज, बेगमपुर का बादशाह बनाया है। हम सभी अपने-अपने पार्ट को देख सदा खुशराज़ी रहते हैं। बाबा कहते बच्चे कभी कोई ऐसा संकल्प न आये जो निराश कर दे। यह भी नहीं सोचो कि पता नहीं मेरा पार्ट क्या है! इतनी बड़ी आयु में ज्ञान क्यों मिला!... मैं अधरकुमार/अधरकुमारी क्यों बन गई.. ऐसे साधारण संकल्प करके भी अपनी खुशी गायब कर लेते हैं। क्यों, क्या कहने से अच्छी फीलिंग नहीं रहती है। हमारी फीलिंग सदा अच्छी रहे, क्योंकि अभी हम डायरेक्ट भगवान की पालना में पल रहे हैं, जो पार्ट कल्प पहले का था, वही पार्ट इस समय बजा रहे हैं इसलिए छोटे बड़े, नये पुराने सभी खुशकिस्मत, खुशानसीब हैं। तो हर एक अपना श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पार्ट बजाते सदा खुशराज़ी रहो। खुश हैं तो राज़ी हैं, राज़ी हैं तो खुश हैं। भाग्यविधाता बाप ने भाग्य हमारे हाथों में दिया है। एक तरह है हमारा बाबा, दूसरे तरफ है भाग्य। यह भाग्य कहता है समय को सफल करो। संगम का यह समय निष्फल न जाये। समय को अगर थोड़ा भी टेन्शन में गंवाया, अटेन्शन नहीं रखा तो समय सफल नहीं होगा फिर दिल खुश नहीं होगी। दिलखुश मिठाई खानी और खिलानी है तो उसकी सबसे अच्छी विधि है - मैं कौन? मेरा कौन? यहाँ इस दुनिया में परमात्मा के सिवाए और तो कुछ मेरा है ही नहीं। यह बहुतकाल से संस्कार बन जाए। सदा स्मृति में रहे मैं बाबा का, बाबा मेरा, तो जैसी स्मृति वैसी वृत्ति और दृष्टि होगी। बाबा के लायक बच्चे सदा ऐसी स्थिति बनाने का ध्यान रखते हैं। बोलो, आप सभी स्वयं को बाप समान सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाए, मास्टर सर्वशक्तिवान की श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव करते संकल्प, समय, श्वास, सम्पत्ति सब सफल करके

सदा भरपूरता का अनुभव करते हो ना। अच्छा!

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“सफलतामूर्त बनने के लिए त्यागी और तपस्वी-मूर्त बनो”

1) किसी भी कार्य में सफलता-मूर्त बनने के लिये त्याग और तपस्या चाहिए। त्याग में महिमा का भी त्याग, मान का भी त्याग और प्रकृति दासी का भी त्याग—जब ऐसा त्याग हो तब तपस्या द्वारा सफलता स्वरूप बनेंगे।

2) अब अपने ईश्वरीय ब्राह्मणपन के, सर्वस्व त्यागी के पोजीशन में स्थित रहो। हृद की पोजीशन कि मैं सबसे ज्यादा सर्विसएबुल हूँ, प्लैनिंग-बुद्धि हूँ, इनवेन्टर हूँ, धन का सहयोगी हूँ, दिन-रात तन लगाने वाला हार्ड-वर्कर हूँ या इन्वार्ज हूँ। इस प्रकार के हृद के नाम, मान और शान के उल्टे पोजीशन को छोड़ अब त्यागी और तपस्वीमूर्त बनो।

3) तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे तपस्वी। ऐसे त्याग, तपस्या वाले ही सेवाधारी कहे जाते हैं।

4) वह आत्म-ज्ञानी भी जिस्मानी, अल्पकाल की तपस्या से अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं। आप रूहानी तपस्वी परमात्म ज्ञानी हो, तो आपका संकल्प आपको विजयी रत्न बना देगा। अनेक प्रकार के विघ्न ऐसे समाप्त हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। माया के विघ्नों का नाम-निशान भी नहीं रहेगा।

5) तपस्वी की तपस्या सिर्फ बैठने के समय नहीं, तपस्या अर्थात् लगन, चलते-फिरते भोजन करते भी लगन है ना। एक की याद में, एक के साथ में भोजन स्वीकार करना - यह भी तपस्या हुई।

6) जैसे ब्रह्मा बाप के संस्कारों में बेहद का त्याग और बेहद की तपस्या देखी। हर संकल्प में यही रहा कि बेहद का कल्याण कैसे हो। ऐसे बेहद के तपस्वी बनो। दो चार घण्टे के तपस्वी नहीं लेकिन हर सेकेण्ड तपस्या-स्वरूप, तपस्वी मूर्त। मूर्त और सूरत से त्याग, तपस्या और सेवा - साकार रूप में प्रत्यक्ष करो।

7) हरेक यही संकल्प लो कि हमें शान्ति की, शक्ति की किरणें विश्व में फैलानी हैं, तपस्वी मूर्त बनकर रहना है। अब एक दूसरे को वाणी से सावधान करने का समय नहीं है, अब मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो

और बढ़ाओ।

8) जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती वा अनुभव होती है। वैसे आपकी तपस्या और त्याग की झलक दूर से ही आकर्षण करे। हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे।

9) जो निरन्तर तपस्वी हैं उनके मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई नहीं देगा। किसी भी संस्कार वा स्वभाव वाली आत्मा, उनके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना ही रहेगी। दूसरी भावनायें उत्पन्न नहीं हो सकती।

10) जैसे वह तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं, ऐसे आप अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो तब सिंहासन मिलेगा। आपकी हर कर्मेन्द्रिय से देह-अभिमान का त्याग और आत्म-अभिमान की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।

11) ब्रह्मा की स्थापना का कार्य तो चल ही रहा है। ईश्वरीय पालना का कर्तव्य भी चल ही रहा है। अब लास्ट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मों और हर आत्मा के तमोगुणी संस्कारों और प्रकृति के तमोगुण को भस्म करने का कर्तव्य करना है। जैसे चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं, ऐसे एकरस स्थिति के आसन पर स्थित होकर अब अपना तपस्वी रूप प्रत्यक्ष दिखाओ।

12) जब तपस्वी तपस्या करते हैं तो वृक्ष के नीचे तपस्या करते हैं। इसका भी बेहद का रहस्य है, इस सृष्टि रूपी वृक्ष में आप लोग भी नीचे जड़ में बैठकर तपस्या कर रहे हो। वृक्ष के नीचे बैठने से सारे वृक्ष की नॉलेज बुद्धि में आ जाती है। यह जो आपकी स्टेज है, उसका यादगार भक्तिमार्ग में चलता आया है। यह है प्रैक्टिकल, भक्ति मार्ग में फिर स्थूल वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते हैं।

13) जैसे पहले-पहले नशा रहता था कि हम इस वृक्ष के ऊपर बैठकर सारे वृक्ष को देख रहे हैं, ऐसे अभी भी भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा करते हुए तपस्या का बल अपने में भरते रहो। जिससे तपस्या और सेवा दोनों कम्बाइन्ड और एक साथ

रहें।

14) देह-अभिमान को छोड़ना - यह बड़े ते बड़ा त्याग है। इसके लिए हर सेकेण्ड अपने आपको चेक करना पड़ता है। इस त्याग से ही तपस्वी बनेंगे और एक बाप से ही सर्व सम्बन्धों का अनुभव करेंगे।

15) जो त्याग-मूर्त हैं वह कभी भी कोई वस्तु स्वीकार नहीं कर सकते। जहाँ स्वीकार करने का संकल्प आया वहाँ तपस्या

समाप्त हो जायेगी। त्याग, तपस्या-मूर्त जरूर बनायेगा।

16) इस कलियुगी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत वृक्ष की दुर्दशा देखते हुए ब्रह्मा बाप को संकल्प आता है कि अभी-अभी बच्चों के तपस्वी रूप द्वारा, योग अग्नि द्वारा इस पुराने वृक्ष को भस्म कर दें। परन्तु इसके लिए संगठन रूप में फुलफोर्स से योग ज्वाला प्रज्ज्वलित चाहिए। तो ब्रह्मा बाप के इस संकल्प को अब साकार में लाओ।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

20-09-14

मधुबन

“सबसे अच्छा श्रृंगार है शुभ चिंतन में रहना और शुभ चिंतक बनना”

(दादी जानकी)

हम कहते हैं यह सारा ज्ञान सारे विश्व के लिये है। विश्व की राजाई पीछे मिलेगी, अभी हरेक को सेवा से राजाई है। बहनें, अगर सेवा नहीं करती तो राजाई नहीं है, पर सेवा क्या है? स्वयं बाप समान बनना औरों को आप समान बनाना, यही भावना है। बनना। सब बैठे हैं हरेक का वन्डरफुल पार्ट है। जैसे दादी का पार्ट अपना, हमारा पार्ट अपना। यह पूर्वजों का फोटो देखो, एक का पार्ट दूसरे से नहीं मिलता। लेकिन सब बाबा के आज्ञाकारी होकर रहे हैं। बाबा ने कहा और इन सबने हाँ जी किया। वैसे आप सब जो निमित्त बनी हुई हो, तो सेवा में कोई हद न हो, सदा बेहद में रहो। जैसे बाबा ने हम सबका श्रृंगार किया है, श्रृंगारी हुई आत्मा सदा स्वचिंतन करती है, कभी परचिंतन नहीं कर सकती। स्व-चिंतन करने से शुभचिंतन में रहना, सबके लिए शुभचिंतक बनना सहज हो जाता है। अगर शुभचिंतन है तो देखो और कोई चिंतन नहीं, यही श्रृंगार

है।

एक है मनन, दूसरा चिंतन, तीसरा है मंथन। मनन है, जो मन में संकल्प है, वह क्वालिटी वाला है। आत्मा का जो ज्ञान है वो मन, बुद्धि में होने से वो संस्कार बनता है। समझो मैं किसी की भूल देखती हूँ, औरों को नहीं सुनाती हूँ लेकिन अन्दर चिंतन में चलता है तो यह भी तो परचिंतन हुआ ना! सुनायेंगे तो भी ऐसे, कि यह तो ऐसी है, यह ऐसा है...यह सुनाना जैसे अपने स्वधर्म को छोड़ परचिंतन में जाना, यही परधर्म है। मेरा स्वधर्म शान्त है, सच्चाई है, प्रेम है। मैं किसकी हूँ, मेरा कौन है! दिल सच्ची है, दिमाग ठण्डा है, जल्दी गर्म नहीं होता है, जरा भी डिस्टर्ब नहीं होता है। और यह प्रैक्टिकली लाइफ में हिम्मत बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी, नियत साफ तो मुराद हांसिल। जिसकी नियत में सफाई है वो जो संकल्प करेंगे वह हो जायेगा।

दूसरा क्लास

“पाजिटिव सोचने की नेचर बना लो तो निगेटिविटी स्वतम हो जायेगी”

साइंस के यह साधन भी अच्छे हैं जो मैं आप सबके सम्मुख हाजिर हो गई हूँ। (वीडियो कान्फ्रेन्सिंग द्वारा) ड्रामा अनुसार यह साधन बहुत अच्छे हैं लेकिन हमारा काम है साधना में रहना। आप मीडिया वाले बहुत बिजी तो नहीं हो

ना! बिजी हो? मैं 5 मिनट के लिये आप सबका दर्शन करने के लिए आपके सम्मुख हूँ। आप कितने प्रभु के प्यारे हो। दिन-रात सेवा कर रहे हो। बाबा कहते संसार में रहते हुए भी न्यारे रहना और सबके प्यारे रहना।

मेरा नाम पता है ना, बाबा मेरे को जनक कहता था। बाबा ने और सभी दादियों के नाम चेंज किये, पर मेरा नाम नहीं चेंज किया। मेरे को कहा जनक माना विदेही रहने की प्रैक्टिस और ट्रस्टी। विदेही रहना माना अशरीरी बनने का अन्दर ही अन्दर ऐसा अभ्यास करना, यह सदा मुझे याद रहता है। कार्य-व्यवहार में होते हुए भी कैसे न्यारे और प्यारे रहें। मैं जब विदेश में गई तो और कुछ नहीं “डोन्ट वरी नो प्रॉब्लम”, यही पाठ पक्का किया। तो ऐसे जितना पॉजिटिव सोचेंगे उतना खुद में चेंज आती है, औरों में चेंज लाने के लिये ऐसे प्लान बनाया होगा! ऐसा प्लान बनाओ आत्मा कौन? परमात्मा कौन? सबको मालूम पड़े। ड्रामा की नॉलेज से हमको कभी भी व्यर्थ ख्याल नहीं आता है। सभी पॉजिटिव सोचते हैं ना? हाथ उठाओ। निगेटिव में बहुत नुकसान है क्योंकि किसी से भी थोड़ी ग्लानि मन में रखना, यह ठीक नहीं है। हमारी नेचर नेचुरल ऐसी हो, पॉजिटिविटी। तो जो कोई गलत करता

हो, ऑटोमेटिक ठीक हो जाए

वैसे कहा जाता है जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग, जैसा पानी वैसी वाणी। बी.के. बनने से सबसे पहले यह तीन बातें चेंज हो जाती हैं क्योंकि मीडिया वाले बहुत अच्छे, सयाने, समझदार हैं। तो जो भी जहाँ भी हैं, वे सारी दुनिया को चेंज करने के लिये ऐसा प्लान बनाते हैं, जैसा लिखत में लिखते हैं जो कभी भूलता नहीं है। मीडिया का रोल यह है कि बाबा की नॉलेज को जन जन तक पहुँचाना। सभी देशों में बाबा का ज्ञान बहुत अच्छा लगा है। यह मुसलमान है, यह हिन्दू है, यह क्रिश्चियन है, यह पारसी है, हर प्रकार के भाई बहनें मिलेंगे, हमारे बाबा के बच्चों में। लण्डन में तो सारी सभा ऐसी होगी जो सभी को लगता है, हर आत्मा के लिये यह ज्ञान बहुत अच्छा है। जितना परमात्मा के लिये समझ मिलती है उतना दृष्टि, वृत्ति अलग हो जाती है। मुख में ज्ञान का सिमरण, स्मृति और सबकी वृत्ति अच्छी होगी। ओके, ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास

“ज्ञान यूज तब होता है जब बुद्धि व्यर्थ चिन्तन से फ्री है”

हमें जैसे आप सबका ईश्वरीय स्नेह खींचके ले आता है, हम सब एक बाबा के बच्चे हैं। दिनप्रतिदिन ऐसी फीलिंग है जो सूक्ष्म कोई भी भेदभाव हमारे अन्दर न रहे तब मैं बाबा से खुश हूँ, बाबा मेरे से खुश है। ऐसे ही हम एक दो से भी खुश रहें, यह दिन रात ध्यान पर रहे। फीलिंग इंगलिश अक्षर है, हिन्दी में कहते हैं भावना। तो भावना से प्राप्ति खुद को भी है, पहले दिन भर में कार्य व्यवहार करते हैं, अगर यज्ञ का कार्य-व्यवहार न करें तो शोभा नहीं है। यज्ञ सेवा है तो मुझे हमेशा आता है एक बाबा, दूसरा यज्ञ। बाबा को याद करते हैं, यज्ञ की सेवा करते हैं। हर एक निमित्त है यज्ञ सेवा करने के लिए, अगर यज्ञ सेवा न करता तो क्या करता? इसकी सेवा अलग है, इसकी अलग है। जो यह करता है, वो यह नहीं करता है। हरेक का अपना पार्ट है। कभी भी सेवा में कोई भूल न हो, यह थोड़ा क्या पूरा अटेन्शन हो। जो भी सेवा के निमित्त हो उसमें थोड़ा भी अलबेलाई और सुस्ती न हो। मैं अकेला ही थोड़ेही हूँ और भी तो बैठे हैं करने के लिये, थोड़ा यह ख्याल सूक्ष्म संकल्प में भी न आये।

अगर मेरे मन में ज्ञान लग गया, ज्ञान भी अन्दर चिन्तन में

तभी आता है जब वो ज्ञान मैंने यूज किया हुआ है जिससे फालतू चिन्तन से फ्री हैं। शुभ चिन्तन में रहना औरों के लिये शुभ चिन्तक बनना - भाग्य है। कोई भी है चेक करे, मैं किसके लिये भी व्यर्थ चिन्तन नहीं कर सकती हूँ, यह अपने ऊपर मेहरबानी है। मैं कहूँ भगवान की मेहरबानी है, भगवान की मेहरबानी तभी होती है जब मैं अपने ऊपर ध्यान रखती हूँ। अलबेला नहीं रहती हूँ। यह सबसे बड़ा अवगुण है। बड़ा नुकसान है - अलबेलाई में।

प्रश्न:- एक है अलबेलापन, एक है सुस्ती, दोनों में अन्तर क्या है?

उत्तर:- सुस्ती अलबेला बनाती है, सुस्त रहना शोभता नहीं है। अच्छा चांस मिलता है तो सुस्ती नहीं करना चाहिए, पर अलबेले बन जाते हैं, यानि है शब्द सुस्ती और अलबेलाई। सुस्ती वाले कहेंगे मैं नहीं तो यह कर लेंगे ना, नहीं। मतलब अन्दर ख्यालात ऐसे होते हैं जो कमाई नहीं होती। सेवा कोई ड्यूटी नहीं है, सेवा तो हमारी नेचुरल नेचर बन जाये। सुस्ती दुश्मन है, वो अलबेला बना देती है। कोई न कोई कारण बताके जैसे यहाँ से उठके चले गये माना उन्हें कमाई की कोई

खींच नहीं है।

एक है समर्पण, तन मन धन मेरा नहीं है, यह मन भी मेरा नहीं है। अगर मन मेरा है तो तन भी मेरा है। तन मेरा है तो क्या कर रहा है? तन में आत्मा क्या कर रही है? मुझे यह भी बहुत अच्छा लगता है, आत्मा का ज्ञान पहले-पहले बाबा ने जो दिया है मन, बुद्धि, संस्कार... मैंने खास देखा “हू एम आई” फिल्म अच्छी बनाई है। उसमें बहुत अच्छा क्लीयर सब बातें हैं, जो काम की बात है वो मिस नहीं करें, वो उसमें बताया है, बड़ी अच्छी फिल्म बनाई है जो सबके देखने लायक है। कभी मैं टी.वी. देखती नहीं हूँ, लण्डन में भी जहाँ भी रही, वहाँ

टी.वी. नहीं है। मैंने कभी देखा नहीं है, पर उस दिन मुझे कहा तो मैंने कहा ले आओ मैं देखूंगी।

सेवा, याद और सम्बन्ध। सम्बन्ध में रूहानियत, सेवा में कमाई है, याद पर्सनल अपने लिये हैं, जितना याद में रहो उतना और कोई बात याद नहीं रहती है। जो बात एक घण्टा पहले हुई, मुझे याद नहीं है। अभी मुझे भूल गई यानि बीती को चितवो नहीं, आगे की न रखो आश। निज ज्ञान क्या कहता है वो हमें पता है जैसे ड्रामा का ज्ञान है जो बना हुआ है सो ही तो होता है और वही होगा, पूरा हो गया। ओके. थैंक्यू।

“जो बीत चुका है उसे बिन्दी लगाओ, हर सेकण्ड का फायदा लो, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करो”

(गुल्जार दादी जी)

मीठी बाबा हम बच्चों को कितना प्यार करता है, कहता है - आओ बच्चे, मधुबन आपका प्यारा घर है। यहाँ खाओ, पियो, आराम से रहो और बाप को याद करो। तो यह चांस कम नहीं है, आगे चल कर यह दिन याद आयेंगे, इसलिये यहाँ आ करके, इसका महत्व रख करके लाभ उठाना। तो यहाँ के संग का रंग लग जायेगा। कोई भी व्यर्थ संकल्प अगर आपके पास आये तो उसको ऐसे भगाओ जैसे मक्खी-मच्छर को भगाते हैं क्योंकि आप बिजी हैं। जो भरपूर होता है वो हिलता नहीं। तो मन हिले नहीं क्योंकि हम मन के मालिक हैं।

जैसे यह हमारा हाथ है, तो हाथ को जब चाहूँ तब यहाँ से वहाँ करूँ क्योंकि मालिक हूँ ना। वैसे मन सूक्ष्म है। लेकिन है तो मेरा ना। तो मालिक बनकर उस पर अधिकार रखो। ऐसे नहीं मन मेरे को चला रहा है, क्या करूँ..। मेरे अन्दर ऐसा विचार आ जाता है ना, मन मानता नहीं है ना! समझता भी हूँ - श्रीमत पर चलूँ लेकिन मन मेरे हाथ में नहीं है ना! लेकिन अगर मेरा है तो उसकी मैं मालिक हूँ, जैसे मैं चाहूँ वैसे यूज में आना चाहिए क्योंकि मेरा है, मेरे पर अधिकार होता है। जब चाहते नहीं हैं फिर भी बॉडी कान्सेस में क्यों आते हैं, कारण? क्योंकि 63 जन्म से बॉडी से लगाव का अभ्यास हो गया है। लगाव के कारण न चाहते हुए भी वो याद आता है, बॉडी-कान्सेस भूलना मुश्किल हो गया है क्योंकि उससे प्यार है। ऐसे ही बाबा से

अगर हमारा प्यार है तो बाबा को याद करना सहज होना चाहिए, भूलना मुश्किल होना चाहिए।

जबकि बाबा ही मेरा संसार है तो एक ही संसार को याद करना सहज है ना। और बाबा भी एक ही बात कहते हैं कि एक मुझे याद करो। अभी हमारे में से कई ऐसे हैं जो बाबा को याद तो करते हैं लेकिन आत्मा हो करके नहीं करते हैं? अगर हम देहभान में हैं और बाबा-बाबा कह रहे हैं तो बाबा सुनेगा ही क्यों? क्योंकि वह तो आत्मा का बाबा है। देह का बाबा है ही नहीं इसलिए कई कहते हैं कि हम बाबा से बातें तो करते हैं, लेकिन हमको जवाब नहीं मिलता है। तो हम कहते हैं चेक करो कि जिस समय बाबा को याद करते हो तो पहला फाउण्डेशन - मैं आत्मा हूँ और आत्मा परमात्मा को याद कर रही हूँ, पहले यह सारा दिन याद रहता है? आत्म-अभिमानि बनके परमात्मा को याद करते हैं? इसीलिए रोज़ की मुरली में बाबा बार-बार कहते रहते हैं कि अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। कोई सारा दिन शिवबाबा शिवबाबा... मैं तेरा हूँ... कहता रहे, उससे क्या होगा। वो तो जैसे राम राम.. कहते हैं तो मरा मरा ... हो जाता है। तो उससे क्या फायदा हुआ? लेकिन मैं आत्मा हूँ, आत्मा समझके पिता परमात्मा को याद करो फिर देखो सेकण्ड की बात है क्योंकि आत्मा के लिये सिवाए परमात्मा के और कुछ है ही नहीं क्योंकि आत्मा

का सबकुछ है ही परमात्मा। प्राप्ति भी आत्मा को परमात्मा से है, सम्बन्ध भी आत्मा का परमात्मा से है। बाकी चाहिए क्या? प्राप्ति और सम्बन्ध - यही तो दुनिया में भी दो मुख्य बातें हैं। तो चेक करो - हम कैसे याद करते हैं और क्या करते हैं?

हमारा आक्यूपेशन क्या है? मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं विशेष आत्मा हूँ, तो न बॉडी-कॉन्सेस हो, न एक्शन कॉन्सेस हो, इसके लिये बीच-बीच में (ट्राफिक कंट्रोल के समय या खाते-पीते समय) चेक करके चेंज करो। काम-काज करते भी अपना आक्यूपेशन नहीं भूलना चाहिए। तो पूरा वर्सा लेने के लिये आपको अपने ऊपर अटेन्शन रखना पड़ेगा। अटेन्शन रखो तो टेन्शन खत्म हो जायेगा। बाकी कार्य-व्यवहार वा सम्बन्ध-सम्पर्क में किसी भी कारण से कुछ भी हो जाता है या कोई

समस्या आती है तो भी क्यों, क्या... के चक्कर में अपनी एनर्जी को वेस्ट यूज मत करो क्योंकि संगमयुग अतीन्द्रिय सुख के लिये है, अब नहीं तो कब नहीं। फिर चांस मिलना नहीं है तो कितना अटेन्शन देना चाहिए। एक सेकण्ड भी नहीं गँवाना चाहिए। व्यर्थ को फौरन खत्म करो। बिन्दी लगा दो। ड्रामा में जो हो चुका फुलस्टॉप। बीती सो बिन्दी। बीती से गुण उठा लो (शिक्षा ले लो)। हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो, इससे अलबेलापन भी खत्म हो जायेगा। माया से घबरायेंगे नहीं लेकिन मायाजीत बनेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा करो। बाबा को मायाजीत बच्चे ही अच्छे लगते हैं क्योंकि अगर स्वराज्य नहीं तो विश्व का राज्य नहीं इसलिये स्वराज्य अधिकारी बनो, जो बाबा का प्यार मिलता है उसको लो और बाबा के प्यार के पात्र बन करके बाबा की आशाओं को पूर्ण करो। अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

एकाग्रता के अभ्यास से विदेही स्थिति का अनुभव करो

आज हम सबको विशेष यही अभ्यास करना है कि हम आत्मा इस देह से न्यारी देही-अभिमानि हूँ। देही-अभिमानि बन देह से न्यारे हो विदेही स्थिति की अनुभूति करनी है। विदेही स्थिति अर्थात् सूक्ष्म संकल्पों से भी परे रहे, जिसको कहते हैं हम आत्मा अपने मूल बीजरूप स्थिति में स्थित रहें। इसके लिए शरीर होते भी अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। जैसे ज्ञान की सबजेक्ट में हम ज्ञान का मनन-चिन्तन करते हैं। परन्तु इस ज्ञान से भी परे विज्ञान अर्थात् योग वा निरन्तर बाबा की याद में हम रहें, ऐसी विदेही स्थिति इतनी परे बन जाये जो सब कुछ देखते भी कुछ नहीं देखें। एक है कर्मयोग जो दिनभर करते, परन्तु यह मन का मौन इसीलिए रखते हैं कि अन्त में हमें कुछ भी याद नहीं आये - जिसको ही कर्मातीत स्थिति कहते हैं।

विदेही स्थिति में रहने से ही विकर्म विनाश होते हैं। एक है कर्म, दूसरे होते हैं विकर्म। परन्तु हम इस देह को भी भूल जायें, बहुत सूक्ष्म अपने को आत्मा समझ सूक्ष्मवतन से भी पार अपने मूलवतन घर में पहुंच जाएं। वही हमारा स्वीट साइलेन्स होम है, इसकी प्रैक्टिस बहुत चाहिए इसलिए यह अभ्यास जरा एकान्त में बैठ एकाग्रचित होकर करना होता है। ऐसी एकाग्रता का जब हम अभ्यास करेंगे तब ही विदेही स्थिति का अनुभव होगा। जिसकी निशानी है कि इन्द्रियों से परे अतीन्द्रिय सुख

की अनुभूति वा अपने परम आनन्द की अनुभूति में चले जायें। तो ऐसे लगेगा जैसेकि हम शिवबाबा के बहुत-बहुत समीप बैठे हैं। अपने बिन्दु आत्मा की स्थिति के ऐसे अनुभवी हो बैठ जाओ जो लगे कि बाबा भी हमारे साथ बिन्दु ज्योति, हम भी बिन्दु ज्योति और सूक्ष्म में बाबा पावर हाउस हमें पावर दे रहा है क्योंकि हमें कर्मातीत बनने लिए पहले चाहिए लाइट हाउस की स्थिति। जितना-जितना लाइट हाउस बनेंगे उतना माइट हाउस होंगे। यह माइट स्वयं आत्मा को भी शक्तिशाली मास्टर सर्वशक्तिवान बनायेगी और इस स्थिति से ही हम दूसरों को भी लाइट हाउस बन लाइट देंगे।

तो वर्तमान समय के अनुसार स्वयं को, सर्व को, विश्व को यही लाइट देने की सेवा करनी है इसलिए रोज़ चाहे अमृतवेले, चाहे दिन में ऐसे सभी संकल्पों को समेट लो जैसेकि कछुआ समेट लेता है। इसके लिए अटेन्शन देने की बहुत जरूरत है। जैसे कई बार हठयोगी अण्डरग्राउण्ड हो जाते हैं, हमारा कोई हठयोग नहीं है परन्तु हम अन्तरमुखता की स्थिति से, अपने मन की शक्ति को भी अनुभव कर सकते हैं। ज्ञान-चिन्तन बहुत अच्छा है परन्तु उसके ऊपर साइलेन्स की शक्ति महान है। जब एक बाबा की याद का संकल्प हो जाता तो इस देह से भी परे हो जाते, जिसके लिए कई बार बाबा कहते देही-

अभिमानी बनो, मनमनाभव। इस स्थिति में अभ्यास करो तो हमने देखा है कि बहुत मज़ा आता और खुद को ऐसे अनुभव होता जैसे सचमुच बाबा ने हमें ऊंचा उठाकर साक्षात्कार मूर्त बना दिया है। आखिर तो अन्त में हमें अव्यक्ति फरिश्ता स्थिति से ही साक्षात्कार मूर्त बन साक्षात्कार करना कराना है। यही स्थिति वह शक्ति देगी जो सूक्ष्म कमी कमजोरियां अपने आप समाप्त हो जायेंगी। जो कभी-कभी कहते माया की सूक्ष्म कमी-कमजोरियां हैं, वह सूक्ष्म में ही खत्म हो जायेंगी।

बाबा रोज़ कहते बच्चे तुम्हें मायाजीत जगतजीत बनना है, तो इसका सुख कोई अन्त में नहीं लेना है, परन्तु अभी से ही यह स्थिति अनुभव हो कि हाँ, बाबा हम मायाजीत जगतजीत हैं। अभी हम माया से विजयी हैं, विजयी हैं तो नैचुरल इस स्थिति से जो बाबा शिक्षायें देते वे शिक्षायें भी सहज धारण हो

जायेंगी। इस अभ्यास से आत्मा प्युअर बन जाती है, तो व्यर्थ संकल्प भी समाप्त हो जाते हैं। दृष्टि, वृत्ति प्युअर बन जाती है। हम आत्मा, तुम आत्मा भाई-भाई बिन्दु ज्योति तो इसका अभ्यास निरन्तर चाहिए।

सबसे ऊंची स्थिति का मज़ा आता ही तब है जब हम अपने घर उड़कर जाते हैं। इसी को ही उड़ती कला का अभ्यास कहते हैं। तो हम अभी उसी उड़ती कला में उड़ने का अभ्यास करेंगे। साइलेन्स की दुनिया अपने घर मूलवतन में उड़कर चलेंगे, जहाँ अपने बाबा का भी घर है। साकारी दुनिया से परे और आकारी दुनिया से भी परे निराकारी दुनिया है, अन्त में इसी घर में हम सबको जाना है। तो अब चलो अपने निराकारी दुनिया अपने मूलवतन घर स्वीट स्वीट साइलेन्स होम में...। अच्छा - ओम् शान्ति।

ब्राह्मण जीवन की मुख्य मर्यादा - पवित्रता (विशेष कार्यशाला)

हमारे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कई विशेषतायें हैं, लेकिन उन सबमें नम्बरवन विशेषता है - पवित्रता। पवित्रता ही फाउन्डेशन है। पवित्रता के सभी पहलू मन-वचन-कर्म की शुद्धता में आ जाते हैं। पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है। सम्पूर्ण पवित्रता का अर्थ है - संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंश न हो। सम्पूर्ण पवित्रता ही ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है, पवित्र आत्माओं का कहीं भी किसी भी रीति से झुकाव नहीं होता है। वह अल्पकाल की सभी कामनाओं, वासनाओं को जीत लेता है। अनेक प्रकार की कामनायें अर्थात् इच्छायें देह की आकर्षण में ले आती हैं। सच्चा ब्राह्मण हर आकर्षण के लगाव झुकाव से मुक्त रह ब्रह्मचारी बनता और ब्रह्मा बाप समान ब्रह्मचारी रहता है।

पवित्रता ही पूज्यनीय बनाती है, सन्तों की महिमा भी इसीलिये है कि वे पवित्र रहते हैं। कुमारी कन्या पवित्रता के कारण पूज्यनीय है। देवत्व की गरिमा भी पवित्रता के कारण है, आज भी मन्दिर में मूर्तियाँ इसी विशेषता के कारण पूजी जाती हैं।

पवित्रता की सहज धारणा कैसे हो? उसकी विधि:-

1. सबसे पहले अपने यथार्थ स्वरूप में स्थित रह, देह से न्यारे ज्योति-बिन्दु स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करें।
2. दृष्टिकोण बदलें, जिस किसी को देखें देह को न देख उसमें

निवास करने वाली चैतन्य आत्मा को देखें।

3. 'विशेषतायें' दाता कौन? यदि किसी की कला, गुण, विशेषता खींचती है तो स्वयं से पूछें, इसकी विशेषता का दाता तो स्वयं भगवान है, तो सबसे अच्छा विशेष तो परमात्मा ही है, तो क्यों ना उधर की ओर ध्यान दें जो परम पवित्र है।
4. नाम-रूप में ना फसें, रूप है देह का, जो है ही विनाशी। तो नाम रूप अर्थात् किसी व्यक्ति विशेष का ध्यान, आकर्षण। सर्व सम्बन्ध संगमयुग पर एक परमपिता परमात्मा से हों, एक बाप दूसरा ना कोई।
5. सम्पूर्ण पवित्र उसे कहा जाता है जो मंसा वाचा कर्मणा श्रीमत प्रमाण चलते हैं, दिनचर्या की अव्यवस्था भी अपवित्रता है।
6. मन्सा में किसी की कमियों का घर करना, मनन चिन्तन वर्णन में आना। परचिन्तन या ईर्ष्या द्वेष में आकर वर्णन करना, इसको भी अपवित्रता कहा जाता है।
7. सम्पूर्ण पवित्रता दृष्टि में आत्मीयता, भाई-भाई की वृत्ति, संकल्प, बोल, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हुए ज्ञान स्वरूप होकर व्यवहार करना।

पवित्रता का प्रभाव :-

1. उसके मस्तक पर स्मृति स्वरूप भाग्य की श्रेष्ठ रेखायें दिखाई देंगी।
2. पवित्र आत्मा चिन्ता मुक्त होगी।
3. पवित्रता के आधार से रूहानियत/न्यारेपन का भाव नज़र आयेगा।
4. उनके होठों पर प्रसन्नता की खुशी झलकती है, मुस्कान दिखाई देती है।
5. पवित्र आत्मा में न्यारे प्यारेपन का बैलेन्स होगा।
6. पवित्रता से आत्मा परम पूज्य बनती है।
7. पवित्रता की शक्ति से इस पतित दुनिया को परिवर्तन कर लेते हैं।
8. पवित्रता की शक्ति से विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को शीतल कर देते हैं।
9. पवित्रता की शक्ति नेत्रहीन को तीसरा नेत्र देती है।
10. पवित्र आत्मा में 5 बातों का अभाव होगा।
 - 1- किसी के द्वारा बोले हुए बोल, किये हुए कर्म मन में क्यों? का प्रश्न उत्पन्न न करें। इसका अभाव।
 - 2- किसी की अच्छी बातों का प्रभाव नहीं होगा। वह किसी व्यक्ति विशेष के सहारे के आश्रित नहीं रहता। अगर हम व्यक्ति विशेष को याद करते हैं, तो परमात्मा से दूर हो जाते हैं, भगवान से पूरी प्रीति ना होना भी अपवित्रता है।
 - 3- लगाव का अभाव, जब मरजीवा बन गये तो लगाव परीक्षा का आधार बनता है। कभी कोई अप्राप्ति होगी, कभी बीमार होंगे, उस समय जिनका पहले साथ मिला है, उन द्वारा दी गयी सुविधायें, सहानुभूति याद आयेगी, यह भी लगाव की निशानी है, यही अपवित्रता का आधार बनती है। सहस्र भुजा वाला भगवान हमारा साथी है, फिर व्यक्ति का आधार क्यों? मैं तो मरजीवा निराधार आत्मा हूँ।
 - 4- पुराने स्वभाव संस्कार बिल्कुल दिखाई न दें, अभाव हो, क्योंकि सारी अपवित्रता देह के स्वभाव-संस्कार से है। कहने का तरीका रॉयल होता है, रोना, रूठना, भूल करना, सिद्ध करना या हीनता का भाव या श्रेष्ठता (पारिवारिक पृष्ठभूमि की) का भाव ये सब

भी अपवित्रता है, इनसे मुक्त होना जो बाबा नहीं चाहते वो कभी ना हो और अर्न्तमुखी रह निरीक्षण करें, उसे योगाग्नि द्वारा भस्म करें। चार्ट रखें।

5- असन्तुष्टता का अभाव। पवित्रता का आधार है सन्तुष्टता। सदैव चिन्तन करें, बाबा ने असंख्य खजाने दिये हैं। उसकी भेंट में सब नगण्य हैं। फिर किसी व्यक्ति, वस्तु, वैभव की तरफ ध्यान नहीं जायेगा।

समझ और संयम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, पवित्रता अविनाशी गुण है। सदाकाल रहने वाली स्थिति है, मैं उस आसन पर सदाकाल स्थित रहूँ।

सावधानियाँ:- परस्पर भाई/भाई या बहिनें/बहिनें शारीरिक

1. स्पर्श के प्रति आकर्षित ना हों, सावधान रहें अपने को न्यारा रखें। स्पर्श में, बोल में चंचलता ना लायें, कपड़े मर्यादापूर्वक पहनें, चलने में भी ध्यान रहे कि “मैं शिव-प्रिया हूँ” मुझे ना किसी पर आकर्षित होना है, ना स्वयं पर किसी को होने देना है, सादगी से श्रेष्ठ व पवित्र एकव्रता रहना है।
 2. एकान्त में किसी से बात नहीं करना है, अकासुर बकासुर की दुनिया है। सामने वाले की बाह्य आकर्षण में ना आयें, मनोवृत्ति पहचानें। किसी के भी प्रभाव में ना आये, प्रभाव में आने से फैमिलियरटी भी हो जाती है जो पवित्रता को नष्ट करती है।
 3. प्रारम्भिक स्वरूप सेवा, सहयोग और रूहानियत का होता है, धीरे-धीरे वास्तविकता सामने आती है। बुद्धि खिंचती है, योग नहीं लगता, इसका अर्थ है अपवित्रता का वास।
 4. ‘पवित्र बनो योगी बनो’- ये हमारा नीति वाक्य धारणा में हो। मैं पवित्रता की देवी हूँ, शुद्ध हूँ, निर्मल हूँ, निर्विकार, निर्विकल्प हूँ, मुक्त आत्मा हूँ, मैं मास्टर पतित-पावन हूँ” परम पावन शिवबाबा की सन्तान हूँ, प्रभु प्रेमी सम्पन्न हूँ। इस स्मृति को रोज़ अमृतवेले रिवाइज कर अपने आपको सम्पूर्ण पवित्रता की देवी वा देव बनाना, यही अपने आपकी रक्षा करना है।
- तो आओ हम सभी ऐसी दृढ़ता सम्पन्न प्रतिज्ञा करें कि पवित्रता के सागर शिवबाबा की नई पावन सृष्टि की रचना के कार्य में मददगार बनने के लिए श्रीमत प्रमाण मन-वचन-कर्म से, स्वप्न और संकल्प से भी सम्पूर्ण पावन बनेंगे और सबको बनायेंगे। ओम् शान्ति।